पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हम सभी जो हैं, आज वो अपनी सोच का ही परिणाम हैं। आकर्षण के सिद्धान्त में हम ज़्यादातर तीन बातों या तीन स्तर पर सोचते हैं, पहला मांगना, दूसरा उस पर आँख मूंद कर विश्वास करना, तीसरा उसे प्राप्त करना। ये बातें जब हम करते हैं, तो वे चीज़ें हमें मिल ही जाती हैं। कहने का भाव है, जब हम उस चीज़ के बारे में, जिसे हम पाना चाहते हैं, उस समय यह महसूस करें कि वो हमें मिल चुकी है, और उसे हम एन्जॉय कर रहे हैं। अर्थात् उसे वैसा महसूस करें, जैसा हम वो चीज़ मिलने के बाद करते। बस यही महसूस करना उस चीज़ को हमारे पास लाने में मदद करता है। यही सिद्धान्त जीवन के हर पल, हर क्षण में कार्य कर रहा है। है क्या, सिर्फ मन के अंदर उठने वाले विचार। जैसे हम किसी बात में जब अच्छा महसूस करते हैं, उसे आप अपनी फ्रिक्वेंसी पर ले आते हैं।

आपको यह बात सोचकर ताज्जुब होगा कि जो हम चाहते हैं, या सोचते हैं, दोनों प्रक्रियाएँ अपने प्रकम्पनों द्वारा चीज़ों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। ये बातें हमारे ज़हन में उतरेगी तब, जब हमारी जागृति की सीमा बहुत ऊपर होगी। रोज़ रोज़ एक ही बात...

जैसे कई बार सभी कहते हैं, मेरी हालत आजकल ठीक नहीं चल रही है, इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि इसके पहले आपकी हालत ठीक थी, उस समय आपने अपने समय को बर्बाद किया। आज उसे फिर से सोचकर वही वाली ऊर्जा इस समय में भी डाल रहे हैं। आपकी हालत खराब नहीं है, खराब थी, अब उसे फिर से आप ठीक करना चाहते हैं, तो ये अच्छी सोच के आधार से होगा। हम सभी अतीत से या पास्ट से आकर्षित हैं, जब आप अपने मौजूदा हालात को देखते हैं, उससे अपने आपको जोड़ते हैं।

अभी सिर्फ अपने को उन विचारों से बिल्कुल भी पल्लवित ना होने दें। बस आप उन विचारों को ही अपने ऊपर लायें जो हमारे वर्तमान को पूरी तरह से बदल दें। बस सोचना ही तो है, इसमें कौन सा आपको टैक्स लग रहा है। लेकिन हमें, आपको थोड़ा वातावरण के विचारों से अपना बचाव करना है, जिससे आपके विचारों में ताकत आ जाए।

जब हम डर से, अवसाद से, आत्मग्लानि से, आलोचना से अपने आपको देखते हैं तो वही हमारे विचारों में भर जाता है। हमें करना है, प्यार, उमंग, खुशी, आभार व्यक्त करते हुए कार्य करना। आप देखें, आपकी ज़िन्दगी बदल जायेगी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-15-2017

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. आशिक बन एक....बाबा को याद करना है (3)
2. ज़िन्दगी, ...के दाता श्वांसो के स्वामी (3)
3. किसी के आने की मंद पद चाप (3)
4. नज़र से....कींदा स्वामी (3)
5. आने वाले....की तुम तकदीर हो (2)
7. थप्पड़, हथेली से मारना (3)
9. खरहा, चौगड़ा (4)
10. पैर, पंख (2)
11. चालाक, धोखेबाज़ (4)
12. ....तुम्हारी ओ प्यारे भगवन, क्षणिक दर्शन (3)
13. कई बच्चों को माया....से पकड़ लेती है, नाशिका (2)
16. उलाहना, असंतोष, ग्लानि (4)
17. अति प्यारा, प्रिय (4)
21. जो राज़ को नहीं जानता वही....होता है (3)
23. धरना, लादना (3)
24. नौकर, गुलाम (2)
27. फायदा, नफा (2)

बायें से दायें

1. .... जगतजीत बनना है (4)
3. आजकल का, वर्तमान (4)
6. स्थिति, अवस्था (3)
8. चंचल, बड़ा....किशन कन्हैया (4)
11. पिता का छोटा भाई (2)
12. सोता, निर्झर (3)
14. माया के वशीभूत हो विकारों में....नहीं लगाना है (2)
15. खींच, आकर्षण (3)
17. बनावटी, दिखावटी (3)
18. ताकत, शक्ति (2)
19. संसार, जगत, दुनिया (2)
20. तेरी नज़रें....हैं किसी से नज़र मिलाना क्या (4)
22. दूल्हा, स्वामी, साजन (2)
25. तूने....गंवाई सोय के (2)
26. रक्षक, रक्षा करने वाला (4)
28. समुदाय, दल, समूह (3)
29. मैं....का बाबा मेरा (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

मोतिहारी-बिहार। संगीत नृत्य राष्ट्रीय अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय लोक अभिव्यक्ति उत्सव के अंतर्गत आयोजित 'लोक यात्रा' कार्यक्रम में अकादमी की सदस्य बहन नूतन कुमारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जयमाला। साथ हैं ब्र.कु. विभा एवं कार्यक्रम निदेशक।

मोह मुक्त मेरा राज्य

एक बार एक राजकुमार अपने कई सैनिकों के साथ शिकार पर गया। वह बहुत अच्छा शिकारी था। शिकार के पीछे वह दूर निकल गया और सारे सिपाही पीछे छूट गये। अकेले पड़ने का एहसास होते वह रुक गया। उसे प्यास भी लग रही थी। उसे पास में ही एक कुटिया दिखाई दी। वहाँ एक सन्त ध्यान-मग्न होकर बैठे थे। राजकुमार ने संत से कहा कि वह एक राजा का लड़का है जिसने मोह को जीत लिया है। सन्त बोले - असंभव! एक राजा और मोह पर विजयी? यहाँ मैं एक संन्यासी हूँ तब भी मोह को जीत नहीं पा रहा हूँ और तुम कहते हो कि तुम्हारे पिता जी एक राजा हैं और मोह को जीत चुके हैं। राजकुमार ने कहा, न केवल मेरे पिता जी बल्कि सारी प्रजा ने भी मोह को जीत रखा है। संत को इसका विश्वास नहीं हुआ तो राजकुमार ने कहा कि चाहें तो इस बात की परीक्षा ले लें। संत ने राजकुमार की कमीज़ मांगी और उसे कुछ और पहनने को दिया। संत ने तब एक जानवर को मार कर उसके खून में राजकुमार की कमीज़ को डुबाया और वह शहर में चिल्लाता हुआ गया कि राजकुमार को एक शेर ने मार दिया। शहर के लोग कहने लगे - अगर वह चला गया तो क्या हुआ। आप क्यों चिल्ला रहे हो? वह उसका भाग्य था। संत ने सोचा कि प्रजा नहीं चाहती होगी कि राजकुमार भविष्य में राजा बने इसलिए इस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है। संत महल में गया और राजकुमार की मौत की बात उसके भाई और बहन को सुनाई। उन्होंने कहा कि अब तक वह हमारा भाई था , अब किसी और का भाई बन जायेगा। कोई हमेशा के लिए साथ तो नहीं रह सकता इसलिए रोने और चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। संत को लगा कि बहन को दूसरा भाई अधिक पसंद है और भाई खुश है कि उसे अब राज्य मिलेगा इसलिए दोनों ने ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। फिर वह पिता के पास गया और खबर सुनाई। पिता बोले, आत्मा तो अमर है और अविनाशी है इसलिए चिल्लाने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह मेरा पुत्र था इसलिए मैंने सोचा कि वह राजा बनने वाला है, लेकिन अब दूसरे पुत्र को राज्य मिलेगा। मैं उसे वापस नहीं ला सकता हूँ इसलिए दु:ख क्यों करूँ। संत सोच में पड़ गया। लेकिन अभी और भी लोग बाकी थे। राजकुमार की माता और पत्नी। संत ने सोचा कि ये दो व्यक्ति तो ज़रूर व्याकुल होंगे। लेकिन वहाँ से भी वैसा ही उत्तर पाकर संत आश्चर्य में पड़ गया। उसे अपने आप पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सच देख रहा है। आखिर हारकर उसने अपने आने का उद्देश्य और राजकुमार के ज़िन्दा होने की बात सबको सुना दी। राजकुमार ने वापस आकर अपना राज्यभाग्य सम्भाला और हर चीज़ पहले की तरह चलती रही।

मोह पाँच विकारों में से एक है। वह हमारी शान्ति को छीन लेता है। परखने की शक्ति को खत्म कर देता है। मोह सच्चाई को खत्म करता है। जिसमें मोह है उसमें बुद्धिमानी नहीं हो सकती। इस कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि, ना हमें दूसरों में मोह हो और ना ही दूसरों का हममें मोह हो। तब ही हम विश्व के मालिक बन सकते हैं।